वो मनहूस दिन

गीता हरिहरन

(पिछले अंक का शेष भाग)

लाला सोने के कमरे की ओर जाने के लिए पलटा ही था कि बगल में पड़ी मेज़ से उसका घुटना जा टकराया।

"देखा, यही है बदकिस्मती!" वह चिल्लाया। "घर के सबसे सुरक्षित कमरे में भी आ गई।" अपना घुटना सहलाते हुए वह एक छोटे-से बच्चे की तरह रिरिया रहा था। अपनी आँखें बन्दकर लाला अपनी सबसे शुभ प्रार्थना गाने लगा। वह डर से काँपता भी जा रहा था।

इधर बालू वीरबल के पास पहुँचा। वह उसे जानता था। वीर बहुत ही मेहनती और खुशमिज़ाज बच्चा था। (बालू जिसे अपने जैसे लोग अच्छे लगते थे, ने सोचा कि शायद वो इससे भी अच्छा था)। वह डरपोक था पर उसका नाम वीर था। बालू उससे नरमी से पेश आया। "बेटा, माफ करना पर क्या करें मालिक ने सुबह-सुबह तुम और तुम्हारी झाड़ू को देख लिया।" बालू बहुत ही आत्मीयता से बोला। "पर मैं तो सिर्फ झाड़ू लगा रहा था। पत्तियाँ उड़ रही थीं।" डरा हुआ वीर फुसफुसाया। अब वो घर जाकर माँ को कैसे बताएगा कि लालाजी उससे नाराज़ हैं। वह तो लालाजी से भी ज़्यादा ज़ोर-से गुस्सा होगी उस पर।

"समझता हूँ बेटा। मैं किसी तरह तुम्हें इस काम के पैसे दे दूँगा। पर, अब तुम्हें यहाँ से जाना होगा।"

वीरबल घर कैसे जाता? वह अपनी बस्ती के कुएँ के पास के पीपल की मोटी डँगाल पर बैठ गया। वह बार-बार समझने की कोशिश कर रहा था कि यह सब हो कैसे गया! कैसे एक तुच्छ सफाई वाले से इतना बड़ा लाला नाराज़ हो गया? और कैसे उसके कारण लाला पर बदकिस्मती आ गई? वीर को बस इतना समझ में आया कि उसका काम छूट चुका है। वह लालाजी से यह भी तो नहीं पूछ सकता था कि उसकी गलती क्या है? और उसे फिर से उसका काम कैसे मिल सकता है। उसे ज़्यादा डर तो इस बात से लग रहा था कि वह माँ को बताएगा कैसे। वो तो झाड़ू लेकर उसे मारने दौड़ पड़ेगी।

तभी वीर ने देखा कोई उसकी तरफ हाथ लहराता हुआ आ रहा है। उसने झट-से आँसू पौंछ लिए। पास आने पर उसने देखा उसकी दोस्त अकबरी है। "तू कहाँ था? आज खेलने नहीं चलना है?" वीर ने अपना सिर हिला दिया। उससे बोला नहीं जा रहा था। अकबरी वीर से अलग थी। जैसे कोई भी दो दोस्त हो सकते हैं। (वीर को लगता शायद इसलिए वे दोस्त हैं। एक के पास जो नहीं है वह दूसरे के पास है।) वीर ने पेड़ पर चढ़ती अकबरी की चमकीली आँखों को, हाँफते चेहरे को देखा। उसे मालूम था कि अकबरी को लाला वाला सारा किस्सा सुनाना ही पड़ेगा। वह थी ही ऐसी। हर चीज़ को जान कर ही दम लेती थी। एक बात और थी उसमें। वह किसी भी गड़बड़ से निपटने का रास्ता निकाल लेती थी। वह बहादुर थी। उसे लगता था कि किसी भी चीज़ से क्या डरना। बेशक, जब वीर ने अपना किस्सा बताया तो उसकी आँखों में आहा...! का-सा भाव आया। (या यह सिर्फ उसे ही लगा क्योंकि उसे खुद भी तो इस किस्से का सिर-पैर समझ नहीं आ रहा था।)

"क्या कहा, तुम्हें काम से इसलिए निकाल दिया क्योंकि तुम उसके लिए बदकिस्मत हो? तुम?" वो चहककर बोली। वीर सोचने लगा कि पता नहीं उसे इसमें खुश होने जैसा क्या दिखा।

अकबरी ने बाँहों से अपनी आँखें पौंछीं और शरारत भरे अन्दाज़ में बोली, "जवाब आसान है। तुझे नहीं दिखता?"

"ना," वीर ने काँपते होंठों से कहा। "तुझे हँसी सूझ रही है! मेरी माँ मेरा क्या हाल करेगी तू क्या जाने? चटनी पीस देगी मेरी वो।"

"नहीं बाबा। उनको पता चलेगा तब ना। चल, चलते हैं।"

वीर जानता था कि उससे पूछने का कोई फायदा नहीं कि कहाँ जा रहे हैं। अकबरी के पीछे-पीछे वो डँगाल से कूदा। गली से दौड़ते हुए अकबरी बोली, "बता तो आज लाला के साथ क्या हुआ? वे दुकान गए। ढेरों पैसा बनाया। बालूजी पर धौंस जमाई। और देख तेरे साथ क्या हुआ? बेचारा तू, भूखा-प्यासा पेड़ पर पड़ा रहा। न काम मिला, डरा हुआ रहा सो अलग।"

वीर को पक्का नहीं पता कि वो जो समझा क्या वही अकबरी कह रही थी। लेकिन लाला को यह बताएगा कौन? और क्या लाला मानेगा?

बालू ने बही-खाता बन्द होने तक इन्तज़ार किया। मनीराम आज अच्छे मूड में थे। महीने का हिसाब बता रहा था कि इस दफा भी अच्छा-खासा मुनाफा हुआ है। अब तक वह सुबह के अपशुकनी लड़के और उसकी झाड़ू के बारे में भूल चुका था।

"साहब," आवाज़ में अतिरिक्त मिठास घोलते हुए बालू बोला, "दो बच्चे आप से मिलना चाहते हैं।"

"हाँ..हाँ बुलाओ उन्हें।" (जब जेब में ढेर सारा पैसा भरा हो तो उदार बनना आसान है।)

वीर की हिम्मत बँधाने के लिए अकबरी ने उसका हाथ दबाया और दुकान में घुसी, "लालाजी, क्या बालूजी ने आपको बताया कि आप मेरे दोस्त के लिए कितना अपशकुन लेकर आए हैं?"

"मैं? किसी के लिए अपशकुन बना? कैसे?" लाला सन्न था।

लालाजी आपका तो बस घुटना ही फूटा बाकी सब तो अच्छा रहा ना! पर मेरे दोस्त को देखो," डर से काँपते वीर की ओर मुड़ते हुए वह बोली, "आज सुबह सबसे पहले उसने आपका चेहरा देखा और देखो उसका काम चला गया, उसकी माँ उसकी कुटाई करने वाली है, काम

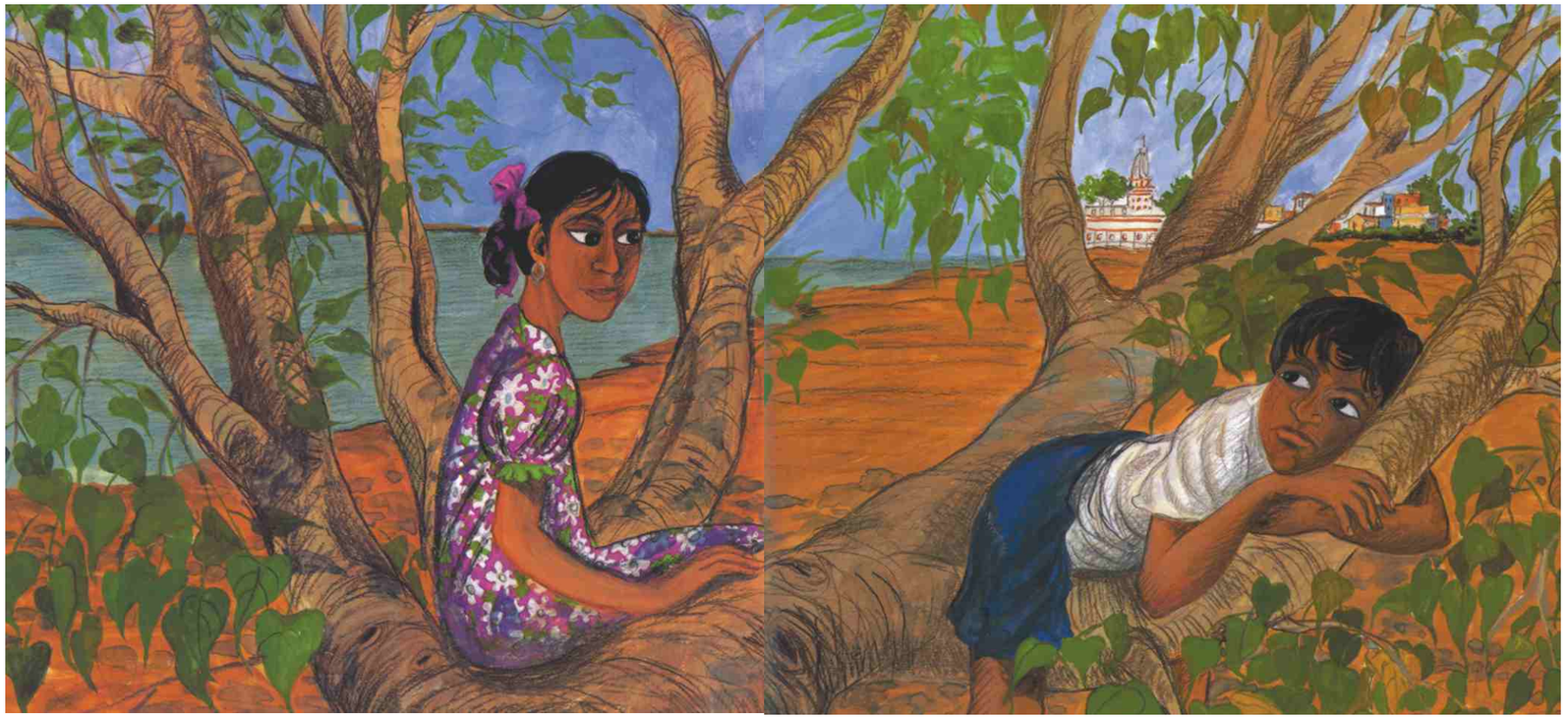

सभी चित्रः तापोशी घोषाल

नहीं तो आज खाने को भी कम मिलेगा। तो कौन किसके लिए बुरी किस्मत लेकर आया?"

बालू, वीर और अकबरी लाला मनीराम का चेहरा देखने लगे – कुछ चकराया, कुछ डरा हुआ-सा चेहरा। वह सोच रहा था कि वो इतना बड़ा लाला बदकिस्मती का जीता-जागता दूत! ऐसे कैसे हो सकता है? इसे बदलना होगा। आज वो इस छोटे बच्चे के लिए अपशकुन बनकर आया है। हो सकता है कल वो खुद अपने लिए अपशकुन बन जाए! बच्चे उसके सोचने को देख रहे थे।

लाला मनीराम इस विचार से ही काँप उठा। वो जान गया था कि उसे क्या करना है। उसे लाला मनीराम बनना होगा, खुशकिस्मती लाने वाला लाला।

"बालू," लाला चिल्लाया, "लड़के के लिए अच्छा-सा काम ढूँढो।"

वीर का मुँह खुला का खुला रह गया। बालू के चेहरे से खिसियानी-सी हँसी फूटने ही वाली थी।

पर अकबरी के चेहरे पर कोई अचरज न था। लाला बालू से बोला, "जब तक काम मिलता है उसे बढ़िया खाना दो और उसके लिए नए कपड़े लाओ।"

"देखा?" लाला मनीराम चमकीली आँखों वाली अकबरी से बोला जो उसके चेहरे से हट ही नहीं रही थीं। "मैं खुशकिस्मती लाया हूँ, अपशकुन नहीं।"

इस बार वीर ने अकबरी का हाथ दबाया – यह कहने के लिए कि अब वो लाला से भी बेहतर जानता है कि बदकिस्मती को खुशकिस्मती में बदला जा सकता है। खासतौर पर अगर कोई खुद उसके लिए कुछ करे तो!

चकमक

2010 अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता वर्ष

3. बारानाजा

किसी अनाज की दुकान में लगभग कितनी किस्म के अनाज देखे हैं तुमने? बारानाजा के बारे में सुना है? हमारे यहाँ प्रथा रही है कि किसान एक नहीं कई अलग-अलग तरह के अनाज बोते हैं। इसका महत्व इसलिए है कि कभी सूखे या ज़्यादा बारिश या किसी और वजह से कुछ फसलें बरबाद हो जाएँ तब भी कुछ ऐसे अनाज की पैदावार तो हो सके जो इन विपरीत परिस्थियों को झेल सकते हों।

4. काला चावल

चित्र: इंटरनेट

हाँ, चावल काला भी हो सकता है। चीन की यह दुर्लभ किस्म बैंगनी-काली-सी होती है। इसे वर्जित चावल भी कहा जाता है। शायद इसलिए क्योंकि यह काफी दुर्लभ होता है। इसे बादशाहों का पकवान माना गया। हमारे यहाँ बस्तर में भी चावल की एक बैंगनी रंग की किस्म उगाई जाती है। पर इसके दाने सफेद ही हैं।